सीसीई आदर्श प्रश्नपत्र–2

हिंदी : कोर्स 'ए'

द्वितीय सत्र (संकलित परीक्षा-II)

(*हल सहित*)

कक्षा : दसवीं

समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 90*

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्नपत्र के चार खंड हैं–'क', 'ख', 'ग' और 'घ'।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमानुसार दीजिए।

खंड 'क'

अपठित गद्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

पाटलिपुत्र पहुँचकर यूनानी दूत मेगास्थनीज आचार्य विष्णुगुप्त से भेंट करने के लिए नगर की सीमा से बाहर स्थित उनकी कुटिया पर जब पहुँचा, उस समय शाम ढलने ही वाली थी, अँधेरा छाने लगा था। मेगास्थनीज ने बाहर से ही देखा कि आचार्य अपने आसन पर बैठे कुछ काम करने में लगे हुए हैं। प्रकाश की व्यवस्था के लिए वहीं रखी एक तिपाई पर दीया जल रहा था। मेगास्थनीज के द्वार के निकट पहुँचने पर आचार्य ने उसे भीतर आकर स्थान ग्रहण करने का संकेत किया और स्वयं अपने कार्य में तल्लीन रहे। कुछ समय के उपरांत उन्होंने अपना कार्य समाप्त करके प्रकाशमान दीपक को बुझा दिया और पास ही रखा एक अन्य दीपक जला लिया। मेगास्थनीज सोचने लगा कि जब एक दीपक जल ही रहा था तो आचार्य ने उसे बुझाकर दूसरा दीपक क्यों जलाया ? उससे रहा नहीं गया और उसने आचार्य से इसका कारण पूछ ही लिया। आचार्य ने सहजता से कहा, 'तुम जब यहाँ आए, तब मैं जो काम कर रहा था, वह राज्य-व्यवस्था से सम्बन्धित था और तब जो दीपक जल रहा था, उसका खर्च शासन-तंत्र उठाता है। लेकिन अब चूँकि वह कार्य समाप्त हो गया, इसलिए मैंने वह दीपक बुझा दिया। अभी जो दीपक मैंने जला रखा है उसके खर्च का वहन मैं अपनी आय से करता हूँ। मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए राज्य के संसाधन का दुरुपयोग कैसे कर सकता हूँ ?'

मेगास्थनीज ने नैतिक जवाबदेही का ऐसा उदाहरण और कहीं नहीं देखा था। वह समझ गया कि मौर्य-शासन का भविष्य उज्ज्वल है।

1. आचार्य विष्णुगुप्त कहाँ रहते थे ? (1)

(क) पाटलिपुत्र के भव्य भवन में (ख) गाँव की एक मामूली झोंपड़ी में

(ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में (घ) गंगातट पर बने आश्रम में

2. मेगास्थनीज के सोच का कारण था ____________। (1)

(क) विष्णुगुप्त का कुटिया में निवास करना (ख) उनका अत्यन्त व्यस्त रहना

(ग) एक दीपक बुझाकर अन्य दीपक जलाना (घ) अपने कार्य को समय पर निबटाना

3. मेगास्थनीज ने आचार्य से क्या पूछा ? (1)

(क) उनके स्वास्थ्य की कुशल (ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण

(ग) राज्य-व्यवस्था के बारे में (घ) राज्य की प्रजा के विषय में

4. दीपक की घटना संदेशवाहक है ____________। (1)

(क) प्रशासक की कर्मठता की (ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की

(ग) प्रशासक की कुशल प्रशासन शैली की (घ) राज्य के प्रति प्रशासकीय निष्ठा की

5. **'दुरुपयोग' शब्द में उपसर्ग है ________।** (1)

(क) दु (ख) दुर

(ग) दुरु (घ) दुर्

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख) 5. (घ)।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं। किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पड़ते हैं। अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ों में बाँट देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे ? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं।

व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नहीं करते। समस्या आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती हैं। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते हैं। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं। जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

1. **बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं, क्योंकि________।** (1)

(क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं

(ख) रुकावटों को हटाकर ही आगे बढ़ा जाता है

(ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा-रहित नहीं होता

(घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें किसी-न-किसी रूप में आती ही हैं

2. **पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार सिद्ध करते हैं कि ________।** (1)

(क) छोटी-छोटी असफलताओं को जीतकर ही बड़ी सफलता मिलती है

(ख) बड़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है

(ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है

(घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता

3. **व्यक्ति सफलताओं के बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है, क्योंकि________।** (1)

(क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती हैं

(ख) सफलताएँ यह अवसर नहीं देती

(ग) सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति निश्चिंत हो जाता है

(घ) असफलताएँ उसको सफलता के लिए प्रेरित करती है

4. **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है ________।** (1)

(क) सफलता का मार्ग (ख) सफलता और असफलता

(ग) असफलताओं से प्रेरणा (घ) असफलता सफलता का आधार

5. **'आधार' का पर्यायवाची शब्द है ________।** (1)

(क) धारदार (ख) स्थिर

(ग) बुनियाद (घ) जड़

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (घ) 5. (ग)।

अपठित काव्यांश

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

मान लूँ मैं हार कैसे ?
रोकना मुझको असंभव रूप की मदिरा पिलाकर,
ईंट-पत्थर और काँटे राह में मेरी बिछाकर,
रुक नहीं सकता कदम गर उठ गया जलती चिता पर,
उठ गया तो क्या चिता, शव उठ चलेगा साथ पथ पर,
सौंप दूँ दुर्भाग्य को अपना मनुज-अधिकार कैसे ?

आज अंतर-प्यास मेरी रस नहीं, विष चाहती है,
दग्ध प्राणों में प्रलय की गूँज भरना चाहती है,
चाहता मन सिंधु-नभ-थल-गिरि-अतल को जीत लेना,
ज़िन्दगी मेरी कहीं पर भी न रुकना चाहती है,
मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, सींच दूँ रसधार कैसे ?

1. लक्ष्य की ओर बढ़ते पथिक के मार्ग में बाधक नहीं है ________। (1)
(क) रूप की मदिरा (ख) मार्ग की बाधाएँ
(ग) दुर्भाग्य का अभिशाप (घ) जलती चिता

2. अपराजेय पथिक हार न मानता हुआ चाहता है ________। (1)
(क) मदिरा द्वारा अन्तर की प्यास बुझाना (ख) उत्साही जीवन में विनाश की हुंकार भरना
(ग) मार्ग की बाधाओं को हटाना (घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना

3. पथिक किस पर विजय प्राप्त करना चाहता है ________। (1)
(क) पथ की बाधाओं पर (ख) मरुभूमि जैसे रसहीन जीवन पर
(ग) सागर, आकाश, भूमि और पर्वत पर (घ) गतिहीन जीवन पर

4. 'मैं मरुस्थल का पथिक हूँ' पंक्ति का आशय है ________। (1)
(क) मैं रेतीले मैदान का बटोही हूँ (ख) मैं युद्धस्थली का योद्धा हूँ
(ग) मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने का आदी हूँ (घ) मैं जीवन की दुर्गम और नीरस राह का राहगीर हूँ

5. 'मनुज-अधिकार' में समास है ________। (1)
(क) द्विगु (ख) कर्मधारय
(ग) तत्पुरुष (घ) बहुव्रीहि

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)।

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

धूप की तपन खुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेड़ों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन

पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
हजारों मील चलकर
गई थीं जो नदियाँ
और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ
भेजा मीठे जल का तोहफा
नदियों को फिर जिसने भर दिया।

1. पेड़ों की प्रतिज्ञा है ________। (1)

(क) सबको फल देना (ख) धूप की तपन लेना
(ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना (घ) संसार का हित करना

2. बदले में धूप पेड़ों को देती है ________। (1)

(क) शीतल छाया (ख) फूलों की सुगंध
(ग) पत्तों की हरियाली (घ) शाखाओं की मज़बूती

3. नदियाँ हज़ारों मील किसलिए चलती हैं ? (1)

(क) प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए (ख) भूमि को उर्वर बनाने के लिए
(ग) सागर को मीठा जल देने के लिए (घ) मरुस्थल को सरस बनाने के लिए

4. सागर नदियों का ऋण चुकाता है ________। (1)

(क) उनके मीठे पानी को स्वीकार कर (ख) उनको खारी जल का उपहार देकर
(ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर (घ) नदियों की बाढ़ का कारण बनकर

5. कविता का संदेश है ________। (1)

(क) जैसे के साथ तैसा व्यवहार (ख) अपकारी के प्रति उपकार का भाव
(ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता (घ) कृतघ्नता जीवन का अभिशाप

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ग)।

खंड 'ख'

व्यावहारिक व्याकरण

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए– (5 × 1 = 5)

(क) <u>वाह</u>! क्या सुंदर दृश्य है।
(ख) <u>मैं</u> चाहता हूँ कि तुम पढ़ो।
(ग) खाने को <u>कुछ</u> लेकर आओ।
(घ) <u>भूषण</u> वीर रस के कवि थे।
(ङ) वह पुस्तक <u>पढ़ रहा है</u>।

उत्तर– (क) **वाह!**–विस्मयादिबोधक अव्यय, आश्चर्यसूचक।
(ख) **मैं**–उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।
(ग) **कुछ**–अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक।
(घ) **भूषण**–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।
(ङ) **पढ़ रहा है**–सकर्मक क्रिया (पुस्तक-कर्म), संयुक्त क्रिया, वर्तमान काल।

प्रश्न 6. निर्देशानुसार कीजिए– (5 × 1 = 5)

(क) राजेश ने कहा कि मैं आज स्कूल नहीं जाऊंगा। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(ख) मजदूरों ने काम कर लिया है। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(ग) निधि गा रही है और नाच रही है। (सरल वाक्य में बदलिए)

(घ) नीतू ने कविता लिखकर पुरस्कार प्राप्त किया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ङ) प्रथम आने वाले को पुरस्कार दिया जाएगा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर– (क) मिश्र वाक्य

(ख) सरल वाक्य

(ग) निधि नाच-गा रही है।

(घ) निधि ने कविता लिखी और पुरस्कार प्राप्त किया।

(ङ) जो प्रथम आएगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा।

प्रश्न 7. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए– (5 × 1 = 5)

(क) दीपिका ने खाना बनाया। (कर्मवाच्य में)

(ख) यह मकान दादाजी के द्वारा बनवाया गया। (कर्तृवाच्य में)

(ग) पुष्पलता ने रुपए दिए। (कर्मवाच्य में)

(घ) कुली ने सामान नहीं उठाया। (भाववाच्य में)

(ङ) लालचंद से चला नहीं जाता। (वाच्य का नाम बताइए)

उत्तर– (क) दीपिका द्वारा खाना बनाया गया।

(ख) यह मकान दादाजी ने बनवाया था।

(ग) पुष्पलता द्वारा रुपए दिए गए।

(घ) कुली से सामान नहीं उठाया गया।

(ङ) भाववाच्य।

प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए– (5 × 1 = 5)

(क) वह तीन बेर खाती थी वह तीन बेर खाती है।

(ख) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

(ग) पीपर पात सरिस मन डोला।

(घ) चरण-कमल बंदौ हरि राई।

(ङ) उषा सुनहले तीर बरसती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई।

उत्तर– (क) यमक अलंकार

(ख) अनुप्रास अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

(ङ) मानवीकरण और उपमा अलंकार

खंड 'ग'

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए–

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब

की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।

1. बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त सर्वोच्च सम्मान था ________। (1)

(क) पद्मविभूषण (ख) संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार

(ग) विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियाँ (घ) भारतरत्न

2. बिस्मिल्ला खाँ हमेशा के लिए संगीत के नायक क्यों बने रहेंगे ? (1)

(क) शहनाई की जादुई आवाज़ के कारण। (ख) सातों सुरों को बरतने की तमीज़ के कारण।

(ग) भाईचारे की भावना को मज़बूत करने के कारण। (घ) अजेय संगीतयात्रा के कारण।

3. बिस्मिल्ला खाँ की सबसे बड़ी देन है ________। (1)

(क) संगीत-रसिकों को रसविभोर करना

(ख) संगीत की शास्त्रीय परंपरा को जागृत रखना

(ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन-भर सँजोए रखना

(घ) एक सच्ची इन्सानियत का उदाहरण पेश करना

4. 'संगीत नाटक अकादमी' क्या है और कहाँ स्थित है ? (1)

(क) दिल्ली में, संगीत और नाटकों का आयोजन करने वाली संस्था।

(ख) दिल्ली में, संगीतकारों एवं नाटककारों का एक संगठन।

(ग) नई दिल्ली में स्थित एक विश्वविद्यालय।

(घ) नई दिल्ली स्थित संगीत और नाट्यकला से संबद्ध संस्था।

5. 'खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।'–प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है– (1)

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य (घ) असाधारण वाक्य

उत्तर– 1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)।

अथवा

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति-विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा। एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है।

1. लेखक के अनुसार व्यक्ति-विशेष की संस्कृति का स्वरूप है________। (1)

(क) व्यक्ति-विशेष के द्वारा की गई खोज

(ख) व्यक्ति-विशेष के द्वारा उपयोगी वस्तुओं का अनुसंधान

(ग) व्यक्ति-विशेष की उत्कट अभिलाषा जो खोज के लिए प्रेरित करती है

(घ) आविष्कार कराने वाली योग्यता और प्रवृत्ति

2. सभ्यता नाम है उस वस्तु का________। (1)

(क) जो खोजी गई है (ख) जो उपयोगी है

(ग) जो उपयोगी और संस्कृति द्वारा आविष्कृत है (घ) जो अपने आप में विशिष्ट है

3. परिष्कृत आविष्कर्ता कौन होता है ? (1)

(क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे।
(ख) जो विशिष्ट पदार्थों का अनुसंधान करे।
(ग) जो नई-नई खोजों को प्रस्तुत करे।
(घ) जो पूर्णतः परिष्कृत हो।

4. वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जाता है उसको ________। (1)

(क) जो नई चीज़ की खोज करता है
(ख) जो उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है
(ग) जो पूर्वजों से प्राप्त वस्तुओं का परिष्कार करता है
(घ) जो विवेक के आधार पर किसी नए तथ्य का दर्शन करता है

5. 'एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है।' प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है। (1)

(क) सरल
(ख) संयुक्त
(ग) मिश्र
(घ) योजक

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ख)।

प्रश्न 10. 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए हैं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए। (4)

उत्तर–कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी उनसे सहमत नहीं थे। उन्होंने निम्नलिखित तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया–

– स्त्रियों का प्राचीन नाटकों में प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। तब शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्राकृत बोलते थे। प्राकृत में तो सारा बौद्ध साहित्य रचा गया है।
– पुराने समय में स्त्रियों की शिक्षा हेतु कोई विश्वविद्यालय नहीं था, न उनके लिए कोई नियमबद्ध प्रणाली थी।
– पुराने समय में भी अनेक पंडिताओं, विदुषियों के नामों का उल्लेख मिलता है। शीला, विज्जा आदि ऐसी ही स्त्रियाँ थीं। अत्रि की पत्नी घंटों पांडित्य प्रकट करती थी, गार्गी ने बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दिया था, मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणी ने शंकराचार्य के छक्के छुड़ा दिए थे। क्या ये सब उदाहरण उनके पढ़े-लिखे होने के प्रमाण नहीं हैं ?
– शकुंतला का दुष्यंत को कटु वचन कहना उसकी अशिक्षा का परिणाम नहीं था, अपितु उसका स्वाभाविक क्रोध था।
– लेखक अंत में यह कहता है कि पुराने समय में भले ही स्त्रियों को पढ़ाने की जरूरत न समझी गई हो, पर अब तो है। हमें स्त्रियों को अपढ़ रखने की पुरानी चाल को भी तोड़ देना चाहिए।
– लेखक यह भी कहता है कि स्त्री शिक्षा प्राप्त करके अनर्थ नहीं कर सकतीं।

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (3 × 2 = 6)

(क) शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है ?

उत्तर–शहनाई की दुनिया में डुमराँव को इसलिए याद किया जाता है क्योंकि यहीं विश्व प्रसिद्ध शहनाईवादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म हुआ था।

डुमराँव में सोन नदी के किनारे नरकट घास मिलती है। इसी नरकट से रीड बनाई जाती है जिसका प्रयोग शहनाई बजाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव निवासी थे।

(ख) 'एक कहानी यह भी' की लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तिहीन क्यों कहा है ?

उत्तर–लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तिहीन इसलिए कहा है क्योंकि उनका अपना कोई व्यक्तित्व था ही नहीं। उनकी माँ बेपढ़ी-लिखी थीं। उनमें धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी। वे पिताजी की हर ज़्यादती को प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फ़र्ज समझकर स्वीकार कर लेती थीं। उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ नहीं माँगा, न चाहा। लेखिका और उसके भाई-बहन सहानुभूतिवश माँ के साथ लगाव रखते थे। पर उनका त्याग कभी लेखिका का आदर्श नहीं बन सका।

(ग) किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा ?

उत्तर–मनुष्य की निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा–

– मनुष्य द्वारा अपने शरीर को सर्दी–गर्मी से बचाने के लिए।

– अपने शरीर को सजाने-सँवारने के लिए।

– तन को ढकने के लिए।

– सुई-धागों की सहायता से मनुष्य द्वारा कपड़ों को जोड़कर वस्त्र बनाने की इच्छा के कारण।

प्रश्न 12. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (5 × 1 = 5)

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) परशुराम ने 'सेवक' और 'शत्रु' किसको कहा है ?

(ग) 'सहसबाहु' कौन था ?

(घ) 'परशुराम ने राम को क्या चेतावनी दी ?

(ङ) इस काव्यांश की भाषा कौन-सी है ?

उत्तर–(क) राम के स्वभाव की दो विशेषताएँ–

–राम विनम्र स्वभाव के थे।

–राम ऋषि-मुनियों का सम्मान करते थे।

(ख) परशुराम ने सेवक उसे बताया जो सेवा करे और शत्रु उसे कहा जो शत्रुता का काम करे।

(ग) परशुराम और सहस्रबाहु में बैर था। सहस्रबाहु ने परशुराम के पिता जमदग्नि की कामधेनु गाय का अपहरण कर लिया था, इसलिए परशुराम ने सहस्रबाहु का वध कर दिया

(घ) परशुराम ने राम को यह चेतावनी दी कि जिसने शिवजी का धनुष तोड़ा है वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है।

(ङ) अवधी भाषा

अथवा

"कितना प्रामाणिक था उसका दुःख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।"

(क) उपर्युक्त काव्यांश में किसके दुख को प्रामाणिक बताया गया है ? (1)

(ख) लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को क्या अनुभूति हो रही थी ? (1)

(ग) माँ को अपनी बेटी "अंतिम पूँजी" क्यों लग रही थी ? (1)

(घ) "लड़की अभी सयानी नहीं थी" से क्या स्थिति प्रकट होती है ? (1)

(ङ) माँ की चिन्ता का मुख्य कारण क्या था ? (1)

उत्तर–(क) काव्यांश में माँ के दुख को प्रामाणिक बताया गया है। कन्यादान के समय माँ का दुख अत्यंत गहरा और वास्तविक था। बेटी के साथ उसकी आत्मीयता थी।

(ख) लड़की के कन्यादान के अवसर पर माँ को दुख की अनुभूति हो रही थी कि मानों वह अपने जीवन की अंतिम पूँजी को दान में दे रही हो।

(ग) माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी इसलिए लग रही थी क्योंकि वह उसके सुख-दुख की साथी थी। उसके जाने के बाद माँ को ऐसा लग रहा था कि उसकी अंतिम पूँजी भी चली गई।

(घ) लड़की ने जीवन के सुख-दुखों में केवल सुख ही देखे थे। वह दुखों से अन्जान थी और एकदम भोली-भाली एवं सरल थी। वह अभी परिपक्व (सयानी) नहीं हुई थी।

(ङ) माँ की चिंता का मुख्य कारण यह था कि लड़की को विवाह-सुख की अस्पष्ट सी जानकारी भर थी। उसने अब तक घर में स्नेहपूर्ण वातावरण ही देखा-समझा था, अभी उसे दुखों से वास्ता नहीं पड़ा था।

प्रश्न 13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (2 × 5 = 10)

(क) 'छाया मत छूना' कविता में मृगतृष्णा किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर–'मृगतृष्णा' झूठे छलावे को कहते हैं। रेगिस्तान में जब भीषण गर्मी के कारण रेत तपने लगती है तब रेत पर पानी का आभास होने लगता है। प्यासा हिरन उसे वास्तविक पानी समझकर उसे पाने को भागता है। पर वह जितना भागता है, पानी उतना ही दूर जाता दिखाई पड़ता है। वास्तव में वह पानी तो होता ही नहीं, पानी का भ्रम मात्र होता है। प्यासा हिरन भागते-भागते दम तोड़ देता है। कविता में 'मृगतृष्णा' शब्द का प्रयोग प्रभुता पाने के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। इसे पाने के लिए भी व्यक्ति जीवन भर भटकता रहता है। बड़प्पन का भाव भी छलावा ही है।

(ख) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीखें दीं ?

उत्तर–माँ ने बेटी को निम्नलिखित सीखें दीं–

– कभी अपनी सुंदरता पर मत रीझना।
– दूसरों की प्रशंसा को वास्तविक मत समझ बैठना।
– आग का प्रयोग रोटियाँ सेंकने के लिए ही करना।
– आग जलने के लिए नहीं है।
– वस्त्र और आभूषणों को कभी अपने जीवन का बंधन मत बनाना।
– लड़की होना, पर लड़की जैसी दिखाई मत देना अर्थात् कमजोर बनकर मत रहना।

(ग) संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है ?

उत्तर–संगतकार के माध्यम से कवि उन व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है जो किसी की सफलता में तो भरपूर योगदान देते हैं, पर उनका नाम कहीं नहीं होता। ये अनाम कलाकार होते हैं। ये सहायक कलाकार स्वयं श्रेय न लेकर अपने मुख्य कलाकार को ही सारा श्रेय लेने का हकदार बनाते हैं। यह सहायक कलाकार कहीं भी चर्चा में नहीं आते। ये गुमनामी की ज़िंदगी जीते हैं, पर होते हैं बहुत महत्त्वपूर्ण।

(घ) 'छाया मत छूना' कविता में कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है ?

उत्तर–'छाया मत छूना' कविता में कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात इसलिए कही है क्योंकि वह सत्य है। जीवन में कठोर सत्य का सामना करना पड़ता है। यथार्थ की कोई अनदेखी नहीं कर सकता। व्यक्ति को वर्तमान में जीना पड़ता है। यथार्थ की अवहेलना करके केवल कल्पनालोक में विचरण करने से दुख के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। विगत सुखद स्मृतियों में खोए रहने से काम चलने वाला नहीं है। कठिन यथार्थ को पूजना यथार्थ का सामना करना ही है।

(ङ) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में लक्ष्मण के कथन में कौन-कौन से जीवन-मूल्य उभरकर सामने आते हैं?

उत्तर–लक्ष्मण के कथन में निम्नलिखित जीवन-मूल्य उभरकर सामने आते हैं–

– देवता, ब्राह्मण, ईश्वरभक्त और गाय पर वीरता का प्रदर्शन नहीं किया जाना चाहिए।
– इनके वध करने पर अपयश का भागी बनना पड़ता है।

— वीरव्रती व्यक्तियों को क्रोध करना और गाली देना शोभा नहीं देता।

— शूरवीर अपने मुँह से अपनी प्रशंसा नहीं करते, अपितु रणभूमि में वीरता का प्रदर्शन करते हैं।

प्रश्न 14. वर्तमान समय में विज्ञान का सर्वत्र दुरुपयोग होता हुआ दिखाई दे रहा है। एक युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान के इस दुरुपयोग को रोकने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है ? (मूल्य आधारित प्रश्न) (4)

उत्तर–विज्ञान ने हमारे जीवन पर अत्यधिक प्रभाव डाला है। यह प्रभाव सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। इसके सकारात्मक प्रभाव ने हमारे जीवन को सुखद बनाया है। इसके बावजूद विज्ञान का सर्वत्र दुरुपयोग देखने को मिलता है। विज्ञान के अणु की रेडियो-धर्मिता का दुष्प्रभाव अनेक देशों ने झेला है। जापान के शहर हिरोशिमा और नागासाकी इसके उदाहरण हैं। विज्ञान ने हमें टी.वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट जैसे साधन प्रदान किए हैं। अब इनके द्वारा एक-दूसरे के एकाउंट को हैंग कर लेना, अश्लीलता फैलाना जैसे दुरुपयोग सामने आ रहे हैं।

इस दुरुपयोग को रोकने में हम भी अपनी भूमिका निभा सकते हैं। हम जन-जागृति के माध्यम से लोगों में चेतना उत्पन्न कर सकते हैं। हम युद्ध के विरुद्ध वातावरण बना सकते हैं। दूरदर्शन पर अश्लील व हिंसा फैलाने वाले कार्यक्रमों का बॉयकाट कर सकते हैं।

प्रश्न 15. निम्नलिखित प्रश्नों में किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– (2 × 3 = 6)

(क) **'साना-साना हाथ जोड़ि........' पाठ में प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है ?**

उत्तर–प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका किसी ऋषि की तरह शांत हो गई। वह सारे परिदृश्य को अपने भीतर समा लेना चाहती थी। लेखिका रोमांचित और पुलकित अवस्था की अनुभूति कर रही थी। वह स्वयं को चिड़ियों के पंखों की तरह हलकी अनुभव कर रही थी। झरना उसे जीवन की अनंतता का प्रतीक लगा। उसे अपने में जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। उसे लगा कि उसके भीतर की तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ झरने के निर्मल जल में बह गई हैं।

(ख) **कठोर-हृदय समझी जाने वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर क्यों विचलित हो उठी ?**

उत्तर–दुलारी को कठोर हृदय वाली समझा जाता था। उसका शारीरिक ढाँचा और स्वभाव दोनों कठोर थे। इसके बावजूद वह हृदय से कोमल थी। उसका टुन्नू के समक्ष यह कथन–'हाड़-माँस की बनी हूँ तभी तो' उसके हृदय की कोमलता को दर्शाता है। मन से वह भी टुन्नू को चाहती है, पर उम्र में काफ़ी अंतर होने के कारण वह उसे स्वीकार नहीं कर पाती। जब उसे टुन्नू की हत्या का समाचार मिलता है तो वह विचलित हो उठती है। कभी किसी की बात पर न पसीजने वाला उसका हृदय कातर हो उठा और उसकी आँखों से आँसू बह चले। उसे पता था कि टुन्नू उसके प्रति सच्चा प्यार रखता है। उसमें वासना की गंध नहीं है। इसी का स्मरण करके वह विचलित हो उठी थी।

(ग) **'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों ?**

उत्तर–लेखक का कहना है कि प्रत्यक्ष अनुभव की तुलना में अनुभूति गहरी चीज़ है। कृतिकार अर्थात् रचनाकार के लिए अनुभूति लेखन में अधिक मदद करती है। अनुभव तो घटित होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेती है जो वास्तव में कृतिकार के साथ घटित ही नहीं हुआ। जो आँखों के सामने नहीं आता, जो घटित के अनुभव में नहीं आता, वही आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है, तब वह अनुभूति-प्रत्यक्ष हो जाता है।

(घ) **जलाए जाने वाले विदेशी वस्त्रों के ढेर में अधिकांश वस्त्र फटे-पुराने थे, परंतु दुलारी द्वारा विदेशी मिलों में बनी कोरी साड़ियों का फेंका जाना उसकी किस मानसिकता को दर्शाता है ?**

उत्तर–आज़ादी की लड़ाई के दौरान विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का आंदोलन चल रहा था। जुलूस निकालकर विदेशी वस्त्र माँगे जा रहे थे। ज़्यादातर लोग घर के फटे-पुराने वस्त्र इस काम के लिए दे रहे थे। पर दुलारी ने उन पर विदेशी वस्त्रों का जो बंडल फेंका उनमें मैनचेस्टर और लंका-शायर की बनी बारीक सूत की मखमली किनारी वाली साड़ियाँ थीं। दुलारी द्वारा नई कोरी साड़ियाँ फेंका जाना उसकी उस मानसिकता को दर्शाता है कि उसके मन में आज़ादी की सच्ची लौ जाग चुकी है। अब उसे विदेशी वस्त्रों के प्रति तनिक भी मोह नहीं रह गया है।

खंड 'घ'

प्रश्न 16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए– (5)

(क) **विद्यालय का वार्षिक उत्सव**
- विद्यालय का जीवन
- वार्षिक उत्सव का दिन
- उत्सव का विवरण
- आपकी भूमिका

(ख) **परिश्रम ही जीवन का आधार**
- परिश्रम का महत्त्व
- जीवन में उसकी उपयोगिता
- भाग्यवाद का निराकरण

(ग) **बस-दुर्घटना का वर्णन**
- कब, कहाँ हुई
- दुर्घटना का वर्णन
- बचाव के उपाय

उत्तर–

(क) विद्यालय का वार्षिक उत्सव

विद्यालय के जीवन में वार्षिक उत्सव का विशेष महत्त्व है। प्रायः शिक्षा-सत्र के अंतिम मास में वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। इसकी तैयारी कई महीने पहले से शुरू हो जाती है। विद्यालय को सजाने-सँवारने का काम कई सप्ताह पहले प्रारंभ हो जाता है। उत्सव संचालन के लिए एक कमेटी का गठन किया जाता है। सांस्कृतिक एवं खेलकूद के कई कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। इस वर्ष 20 फरवरी को हमारे स्कूल का वार्षिक उत्सव मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा निदेशक पधारे। प्रातः दस बजे कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मुख्य द्वार पर अतिथियों का स्वागत किया गया। फिर उनके सम्मुख खेल के फाइनल मैच सम्पन्न हुए। ठीक 11 बजे मंच से सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हुआ। इस कार्यक्रम में मेरी भूमिका सूत्रधार की थी। मैंने भरसक प्रयास किया कि एक घंटे के सांस्कृतिक कार्यक्रम में कोई बोर न हो। उपप्रधानाचार्य ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि के हाथों विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि के संबोधन के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ। यह वार्षिक उत्सव काफी समय तक याद रहेगा।

(ख) परिश्रम ही जीवन का आधार

कर्मशील व्यक्ति परिश्रम से ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है। जो व्यक्ति परिश्रम न करके दैव के भरोसे रहते हैं, उन्हें अंत में असफलता का मुँह देखना पड़ता है। परिश्रम करने से इच्छित वस्तु या लक्ष्य की प्राप्ति होती है। कर्मवीर के लिए संसार में कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं है। वह तो पर्वतों को काटकर सड़कें बना सकता है, उफनती नदियों पर पुल बनाकर उन्हें बाँध सकता है। अंग्रेजी में कहावत भी है–God helps those who help themselves. अतः जीवन में अपनी इच्छाओं की पूर्ति का एकमात्र साधन परिश्रम ही है।

परिश्रम सुख प्राप्ति का आधार है। जीवन का सच्चा सुख और शांति मनुष्य को अपने परिश्रम से ही प्राप्त होती है। जब परिश्रम का फल उसके सम्मुख आता है तब उसका हृदय प्रसन्नता से उछलने लगता है। इससे उसे आत्माभिमान तथा आत्मगौरव की अनुभूति होती है। परिश्रमी व्यक्ति परिश्रम करते समय ही सुखानुभूति करता है। परिश्रम न करने वाले व्यक्ति को अंततः दुखी और परेशान होना पड़ता है। परिश्रमी व्यक्ति परमुखापेक्षी नहीं होता। परिश्रम का फल सदा मीठा और सुखद होता है।

परिश्रम से मनुष्य को जीवन में सफलता मिलती है। वह उन्नति-प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ता जाता है। फलस्वरूप उसे यश और धन दोनों प्राप्त होता है। परिश्रम से धनोपार्जन तो हो ही जाता है, यश भी मिलता है। इतिहास साक्षी है कि अनेक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जो अपने परिश्रम के बल पर ही महापुरुष बने और देश, जाति का पथ-प्रशस्त किया।

यदि हम चाहते हैं कि अपने देश की, जाति की और अपनी उन्नति करें तो यह आवश्यक है कि हमें परिश्रमी बनना होगा। आज हमारे देश में परिश्रम करने को कोई तैयार दिखाई नहीं देता, सब पकी-पकाई खाना चाहते हैं, पकाना कोई नहीं चाहता।

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है, अतः हमें आलस्य, भाग्यवाद, निष्क्रियता, अकर्मण्यता को छोड़कर पुरुषार्थ को अपनाना होगा, क्योंकि परिश्रम ही जीवन है, आलस्य मरण है।

''आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः।'

(ग) बस दुर्घटना का वर्णन

मैं दिल्ली के रोहताश नगर में रहता हूँ। यहाँ की मुख्य सड़क पर भारी यातायात चलता है। सड़क उतनी चौड़ी नहीं जितना दबाव यातायात का इस पर रहता है। इसी कारण लगभग हर सप्ताह यहाँ कोई न कोई दुर्घटना होती रहती है। इस सड़क पर लालबत्ती की व्यवस्था भी नहीं है तथा यहाँ यातायात पुलिस का कोई सिपाही भी नहीं होता।

अभी पिछले सप्ताह की ही बात है कि यहाँ दो बसों में भीषण टक्कर हो गई। दोनों बसें प्राइवेट थीं। इस बस दुर्घटना में लगभग 50-60 यात्री आहत हो गए। पाँच यात्रियों को गंभीर चोटें आईं। दोनों बसों के ड्राइवर अपनी सीट और हैंडल के बीच में फँस गए। इस टक्कर की गूँज दूर-दूर तक सुनी गई। आसपास का सारा यातायात जाम हो गया। चारों ओर घायल यात्रियों की चीखें सुनाई पड़ रही थीं। तभी कुछ नगरवासी उनकी मदद के लिए आगे आए। अभी तक पुलिस दुर्घटना स्थल पर नहीं पहुँची थी। नगरवासियों ने अपने-अपने वाहनों पर घायलों को लादकर अस्पताल तक पहुँचाया। उनके सामने पहली समस्या तो यही आई कि हताहतों को बस से बाहर कैसे निकाला जाए। 15-20 लोगों ने मिलकर यात्रियों को बाहर खींचा। घबराहट में लोग बुरी तरह चीख रहे थे, पर उन्हें तुरंत चिकित्सा सुविधा की आवश्यकता थी। निकट ही कोई नर्सिंग होम या क्लिनिक नहीं था। सरकारी अस्पताल 2-3 किलोमीटर की दूरी पर था। कई लोगों के पास अपनी कारें थीं। वे तुरंत उन्हें ले आए और उनमें घायल मरीजों को लिटाया। इसके बाद वे पुलिस के आने की प्रतीक्षा किए बिना उन्हें अस्पताल की ओर ले गए। पुलिस तो आधे घंटे बाद आई। उसने तो औपचारिक कार्यवाही पूरी की। जब लोगों ने पुलिस को खरी-खरी सुनाई तब जाकर वह थोड़ी-सी हरकत में आई। उसने क्रेन मँगवाकर दुर्घटनाग्रस्त बसों को मुख्य सड़क से हटवाकर एक ओर खड़ी करवाया।

प्रश्न 17. छोटे भाई को पत्र लिखकर मालूम कीजिए कि उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है। साथ ही उसे पढ़ाई के सम्बन्ध में कुछ उपयोगी बातें भी बताइए। **(5)**

उत्तर—

ए-ब्लॉक, 57/8,
पटेल नगर, नई दिल्ली,
दिनांक.........

प्रिय अनुज,
शुभाशीर्वाद।

आज पिताजी का पत्र आया। वे तुम्हारी पढ़ाई को लेकर चिंतित हैं। अब तो तुम्हारी दूसरी संकलित परीक्षा आने ही वाली है। आशा है तुम्हारी पढ़ाई सुचारु रूप से चल रही होगी।

मुझे पत्र लिखकर अपनी पढ़ाई के बारे में सूचित करना। मैं तुम्हें पढ़ाई के बारे में कुछ उपयोगी बातें बता रहा हूँ। उन पर अमल करना तुम्हारे हित में रहेगा।

— अब तक तुम्हारा पाठ्यक्रम तो पूरा हो गया होगा। अब एक कार्यक्रम बनाकर उसकी पुनरावृत्ति शुरू कर दो।
— मुख्य-मुख्य बिंदुओं को एक कॉपी में नोट कर लो और उन्हें बार-बार पढ़ो।
— प्रश्नों के उत्तर लिखकर याद करने का अभ्यास उपयोगी रहता है।
— इन दिनों स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान रखना।

आशा है तुम सकुशल होंगे।

तुम्हारा शुभचिंतक भाई
विनय

अथवा

अपने नगर के चिड़ियाघर को देखने पर वहाँ की अव्यवस्था से आपको बहुत दुख हुआ। इस अव्यवस्था के प्रति चिड़ियाघर के निदेशक का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक पत्र लिखिए।

उत्तर–

सेवा में
निदेशक,
चिड़ियाघर,
नई दिल्ली,

विषय–चिड़ियाघर में अव्यवस्था

महोदय,

कल मैं अपने परिवार के साथ आपके चिड़ियाघर को देखने गया था। जाते समय तो बहुत उत्साह था, पर वहाँ पहुँचकर मेरा सारा उत्साह भंग हो गया।

चिड़ियाघर की टिकट खिड़की पर ही बदइंतजामी थी। वहाँ न तो कोई लाइन लगवाने वाला था और न ही टिकट देने वाला। आधे घंटे की प्रतीक्षा के बाद टिकट देने वाला आया।

चिड़ियाघर में अंदर गंदगी का साम्राज्य है। कहीं कोई व्यवस्था नहीं है। खान–पान की व्यवस्था भी चरमरा रही है। पक्षियों और पशुओं के बाड़े टूटे हुए हैं। उनके परिचय की पट्टिकाएँ उखड़ गई हैं। अंदर पीने का पानी तक उपलब्ध नहीं होता। इस अव्यवस्था को देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि चिड़ियाघर की दशा सुधारने की दिशा में सक्रिय कदम उठाएँ।

सधन्यवाद,
भवदीय
रतन कुमार
संयोजक, जनहित मोर्चा, नई दिल्ली
दिनांक................